प्रादर्श प्रश्न पत्र 2011
विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे | पूर्णांक– 100
Time- 3 Hours | **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।

iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक

iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 21 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

v. प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।

vi. प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।

vii. प्रश्न क्रमांक 20 तथा 21 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.

ii. Please the instructions carefully before writing the answer.

iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.

iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 21.

v. Q. No. 6 to 12 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.

vi. Q. No. 13 to 19 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.

vii. Q. No. 20 and 21 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words.

प्रश्न 1. सही विकल्प का चयन कीजिए।

(अ) पहिए का आविष्कार हुआ था।

(i) पुरापाषाण काल में (ii) मध्यपाषाण काल में

(iii) नवपाषाण काल में (iv) आधुनिक काल में

(ब) हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध स्नानागार स्थित है –

(i) मोहन जोदड़ों में (ii) लोथल में

(iii) काली वंगा में (iv) रंगपुर में

(स) खजुराहों के प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण करवाया था –

(i) चंदेलों ने (ii) परमारों ने

(iii) प्रतिहारों ने (iv) चौहानों ने

(द) सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण किया था –

(i) महमूद गजनवी ने (ii) मुहम्मद गौरी ने

(iii) मुहम्मद बिन कासिम ने (iv) दाहिर ने

(इ) पानीपत का द्वितीय युद्ध हुआ था –

(i) 1556 ई. (ii) 1526 ई.

(iii) 1562 ई. (iv) 1761 ई.

Choose the correct option in the following.

(a) The Wheel was discovered in -

(i) Pre-Stone Age (ii) Mid Stone Age

(iii) New Stone Age (iv) Modern Age.

(b) The famous Bathroom of the Harrapan civilazation is situated in-

(i) Mohan-Jo-Dado (ii) Lothal

(iii) Kali-Banga (iv) Rangpur

(c) The famous temples of Khajuraho were built by -

(i) Chandelas (ii) Parmars

(iii) Pratihars (iv) Chouhans

(d) Somnath Temple was attacked by -

(i) Mehmud Gaznavi (ii) Mohammad Gouri

(iii) Bin Kasim (iv) Dhahir

(e) The Second Battle of Panipat occurred in the year -

(i) 1556 AD (ii) 1526 AD

(iii) 1562 AD (iv) 1761 AD

प्रश्न 2. एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. सबसे प्राचीन वेद का नाम लिखिए?
2. मुहम्मद तुगलक ने देवगिरि का नया नाम क्या रखा था?
3. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?
4. भरहुत का स्तूप म.प्र. के किस जिले में स्थित है?
5. म.प्र. राज्य कब अस्तित्व में आया?

Write the Answer of the following questions in a sentence or in a word.

1. Write the name of the most Ancient Veda?
2. What new name was given to Dev Giri by Mohammad Tughlak?
3. Who was the first president of Indian National Congress?
4. In which district of M.P. the Stupa of Bharhut is located?
5. When the State of M.P. was established?

प्रश्न 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(i) पुराणों की संख्या.....है।

(ii) तराइन का प्रथम युद्ध पृथ्वीराज चौहान और.....के मध्य हुआ था।

(iii) महावीर स्वामी जैन धर्म के.....वें तीर्थकर थे।

(iv) पुरन्दर की संधि.....ई. में हुई थी।

(v) रानी अवंती बाई.....रियासत की रानी थी।

Fill in the blanks.

(i) The number of the Puranas is.....

(ii) The first battle of Tatain occurred between Prathviraj Chouhan and.....

(iii) Mahaveer Swami was the ..... Teernthankar

(iv) The Treaty of Purndar was signed between.....and.....

(v) Rani Avanti Bai was the Queen of .....the Kingdom.

प्रश्न 4. निम्नलिखित वक्यों में सत्य एवं असत्य बताइये –

(i) जातक कथाओं में भगवान बुद्ध के पूर्वजन्म की काल्पनिक कथाएं है।

(ii) वैष्णव सम्प्रदाय का प्रवर्त्तक वासुदेव को माना जाता है।

(iii) केसरी नामक समाचार पत्र का प्रकाशन श्रीमती एनी बीसेन्ट ने किया।

(iv) उदयगिरि की गुफाएं ग्वालियर जिले में स्थित है।

(v) म.प्र. के एरण नामक स्थान से बाराह की मूर्ति प्राप्त हुई है।

Mark True or False.

(i) The Jataka tells are the fictitious tale of the pre Buddhist period.

(ii)

(iii) The news paper 'Kesri' was published by Smt. Anne Besant.

(iv) The Udai Giri caves are situated in Gwalior.

(v) The statue of Tara was discovered from the Airan place of M.P.

प्रश्न 5. स्तंभ 'अ' के लिए स्तंभ 'ब' से चुनकर सही जोड़ी बनाइये –

	अ	–	**ब**
(अ)	कर्पूर मंजरी	–	दण्डिन
(ब)	पृथ्वीराज रासो	–	महात्मा गांधी
(स)	दश कुमार चरित्र	–	सान्याल
(द)	यंग इण्डिया	–	राज शेखर
(इ)	बंदी जीवन	–	चंदवरदाई
		–	कल्हण
		–	हेमचन्द्र

Make the correct pair for column 'A' choosing from column 'B'

	A	-	B
(a)	Karpoor Manjari	-	Dandin
(b)	Prathviraj Raso	-	Mahatma Gandhi

(c)	Das Kuamr Charitra	-	Sanyal
(d)	Young India	-	Raj Shekhar
(e)	Bandi Jeevan	-	Chand Bardai
		-	Kalhan
		-	Hemchandra

प्रश्न 6. सिंधु सभ्यता के विनाश के चार कारण लिखिए।

Give four reasons for decline of the Indus Civilization?

अथवा

Or

वैदिक कालीन आश्रम व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

Throw light on the Ashram system during the Vedic Period?

प्रश्न 7. 'हर्ष सम्राट अशोक और अकबर के बीच की कड़ी था' स्पष्ट कीजिए।

Harsh was a ring in the chain between king Ashok and Akbar?

अथवा

Or

समुद्र गुप्त को भारतीय नेपोलियन क्यों कहा जाता है? समझाइए।

Why Samudra Gupta is known as the Napoleon of India?

प्रश्न 8. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए क्या–क्या कार्य किए? लिखिए।

What actions were taken by Ashok for spread of Buddhism

अथवा

Or

गांधार कला शैली की प्रमुख विशेषताएं लिखिए?

State the important features of Gandhar Style of Art.

प्रश्न 9. राजपूतों की उत्पत्ति से संबंधित चार सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए।

Write four principle for the origin of Rajputs?

अथवा

Or

चोल कालीन कला को संक्षेप में लिखिए।

Write a note on the Chola Style of Art.

प्रश्न 10. 'जहांगीर के शासन काल में नूरजहां वास्तविक शासक थी।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

Explain the statement "Noor Janha was the actual ruler during the reign of Janhagir?

अथवा

Or

मुगल साम्राज्य के पतन के चार कारण लिखिए।

Give reasons for decline of the Mogul Empire?

प्रश्न 11. चौथ एवं सरदेशमुखी के विषय में लिखिए।

Write about Chouth and Sardeshmukhi?

अथवा

Or

पुरन्दर की संधि की शर्तों का उल्लेख कीजिए?

Write the clauses of the Treaty of Purndar?

प्रश्न 12. आधुनिक काल के इतिहास जानने के स्त्रोत लिखिए।

Write sources of the Modern History?

अथवा

Or

''बक्सर के युद्ध ने प्लासी के अपूर्ण कार्य को पूर्ण किया'' इस कथन की विवेचना कीजिए।

The Battle of Boxer completed the unfinished task of the Battle of Plassy?

प्रश्न 13. प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के लिए मुद्राओं के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

Explain the importance of coins in understanding the Ancient History of India.

अथवा

Or

पुरापाषाण काल एवं नवपाषाण काल में प्रमुख पांच अन्तर लिखिए।

Give five distinctions between the Pre Stone Age and the New Stone Age.

प्रश्न 14. मुहम्मद तुगलक की विभिन्न योजनाओं का वर्णन कीजिए।

Describe the various schemes of Mohammad Tughlak?

अथवा

Or

भक्ति आंदोलन के प्रमुख पांच प्रभाव लिखिए।

Write five distinct effects of the Bhakti Movement?

प्रश्न 15. दीन–ए–इलाही धर्म के सिद्धांत लिखिए।

Write the principles of Din-e-Elahi?

अथवा

Or

महाराणा प्रताप ने किस प्रकार मुगलों का प्रतिरोध किया? समझाइये।

Explain how Maharana Pratap resisted the Moghuls?.

प्रश्न 16. मराठों के उत्कर्ष के पांच कारणों का वर्णन कीजिए।

Describe five reasons for the rise of Marathas?

अथवा

Or

शिवाजी के चरित्र एवं कार्यों का मूल्यांकन कीजिए?

Evaluate the character and works of Shivaji?

प्रश्न 17. अंग्रेजी शासन के आर्थिक प्रभावों की व्याख्या कीजिए।

Describe the economic effects of the English Rule?

अथवा

Or

भारतीय पुनर्जागरण के कोई पांच कारणों की व्याख्या कीजिए।

Describe any five reasons for Indian Reinnassance?

प्रश्न 18. 'राजा राम मोहन राय एक महान समाज सुधारक थे' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

'Raja Ram Mohan Roy was a grate social reformer " Explain?

अथवा

Or

1857 ई. की क्रांति की असफलता के पांच कारणों की व्याख्या कीजिए।

Give five reasons for the failure of the 1857 mutiny?

प्रश्न 19. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में म.प्र. की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

Describe the role of Madhya Pradesh in the First War of Independence?

अथवा

Or

मध्यप्रदेश में प्राप्त गुप्त कालीन किन्हीं पांच प्राचीन स्मारकों के बारे में लिखिए।

Write about five ancient monuments of Gupta period in Madhya Pradesh.

प्रश्न 20. भारत में पुर्तगालियों के पतन के छः कारणों की व्याख्या कीजिए।

Give six reasons for the defeat of Portuguese in India?

अथवा

Or

इलाहाबाद की संधि की शर्तों का उल्लेख करते हुए संधि का महत्व स्पष्ट कीजिए।

Explain the importance of the conditions of the Allahabad Treaty?

प्रश्न 21. भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना के उदय होने के छः प्रमुख कारण लिखिए।

Give six main reasons for the rise of National Conscience among the Indians.

अथवा

Or

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाषचन्द्र बोस के योगदान का वर्णन कीजिए।

Write about the contribution of Subhash Chandra Bose in the Indian National Movement?

– – – – – –

आदर्श उत्तर

विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं

वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर –

उत्तर 1. सही उत्तर –

(अ) (iii) नवपाषाण काल।

(ब) (i) मोहनजोदड़ो।

(स) (i) चंदेलों ने।

(द) (i) महमूद गजनवी।

(इ) (i) 1556 ई.।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 2. एक वाक्य में उत्तर –

(1) सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद है।

(2) मुहम्मद तुगलक ने देवगिरी का नया नाम दौलताबाद रखा था।

(3) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष ब्योमेश चन्द्र बनर्जी थे।

(4) भरहुत का स्तूप मध्यप्रदेश के सतना जिले में स्थित है।

(5) मध्यप्रदेश राज्य 1 नवम्बर, 1956 ई. को अस्तित्व में आया।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 3. रिक्त स्थान –

(i) 18

(ii) मोहम्मद गोरी।

(iii) 24वें।

(iv) सन् 1665 ई.।

(v) रामगढ़।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 4. सत्य/असत्य –

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 5. सही जोडियां –

	अ	**–**	**ब**
(अ)	कर्पूर मंजरी	–	राज शेखर
(ब)	पृथ्वीराज रासो	–	चंदवरदाई
(स)	दश कुमार चरित्र	–	दण्डिन
(द)	यंग इण्डिया	–	महात्मा गांधी
(इ)	बंदी जीवन	–	सान्याल

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 6. सिन्धु सभ्यता के विनाश के चार कारण इस प्रकार है :–

1. **बाह्य आक्रमण :–** अनेक इतिहासकारों का मत है कि सिन्धु सभ्यता का विनाश बाहरी आक्रमण से हुआ होगा। यहां के निवासी समृद्ध और शांतिप्रिय थे, नगरों की सुरक्षा का समुचित प्रबंध नहीं था और न ही उनके पास अच्छे हथियार थे। अतः वे आक्रमणकारियों का सामना नहीं कर पाए और उनका विनाश हो गया।
2. **जलवायु परिवर्तन :–** संभवतः जलवायु परिवर्तन भी सिन्धु सभ्यता के विनाश का कारण रहा होगा। विद्वानों का मत है कि प्रारंभ में सिंधु प्रदेश में अच्छी वर्षा होती थी, किन्तु कालान्तर में वर्षा की मात्रा कम होने लगी और धीरे–धीरे रेगिस्तान बन गया। अतः नगर उजड़ गए होंगे।

3. **बाढ़** :– सिन्धु तथा इसकी सहायक नदियों की बाढ़ों ने मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा नगरों का विनाश किया होगा, ऐसा भी अनुमान लगाया जाता है। क्योंकि उत्खनन में इस प्रदेश में सिन्धु नदी के वर्तमान तल से इक्कीस मीटर उंचाई पर नदी की रेत तथा मिट्टी मिली है।
4. **भूकम्प** :– कुछ इतिहासकारों का मत है कि सम्भवतः किसी शक्तिशाली भूकम्प के आने से भी इस सभ्यता का विनाश हुआ होगा।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

वैदिककालीन आश्रम व्यवस्था में मानव के जीवन को 100 वर्ष का मानकर उसे चार भागों में विभाजित किया गया था। जो इस प्रकार है :–

1. **ब्रम्हचर्य आश्रम** :– इसके अन्तर्गत व्यक्ति जीवन के प्रारंभिक 25 वर्षों तक गुरू के आश्रम में रहकर विद्याध्ययन करता था और ब्रह्मचर्य के नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करता था।
2. **गृहस्थ आश्रम** :– 25 वर्ष से 50 वर्ष तक की अवस्था में व्यक्ति गृहस्थ जीवन व्यतीत करता था। जिसमें गृहस्थ जीवन के दायित्वों व समाजहित में अर्थाजन करता था।
3. **वानप्रस्थ आश्रम** :– गृहस्थ आश्रम के पश्चात अगले 25 वर्ष अर्था 50 से 75 वर्ष की आयु तक व्यक्ति वानप्रस्थी का जीवन व्यतीत करता था। जिसमें व्यक्ति समाज के ही रहते हुए गृहस्थी का त्याग कर तपस्यापूर्ण जीवन जीता था।
4. **सन्यास आश्रम** :– वानप्रस्थ आश्रम के पश्चात अगले 25 वर्ष अर्थात 75 से 100 वर्ष की आयु में व्यक्ति अपने परिवार और समाज को छोड़कर वनों में जाकर सन्यासी का जीवन व्यतीत करता था और मोक्ष प्राप्ति का प्रयास करता था।

(उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं पर विस्तार दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 7. हर्ष प्राचीन भारत के महानतम सम्राटों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। हर्ष के चरित्र में अशोक तथा अकबर दोनों का समन्वय था। उसने अशोक और अकबर की भांति विजयें प्राप्त कर संपूर्ण उत्तरी भारत को एकता के सूत्र में बांधा। इसी प्रकार उसने दोनों शासकों की भांति लोक कल्याणकारी तथा धर्म निरपेक्ष राज्य की स्थापना की अपनी धार्मिक नीति को सदैव उदार रखा सभी धर्मों का सम्मान किया। अशोक और अकबर ने प्रेम और सहृदयता से मानव मन पर विजय की और सुदृढ़ साम्राज्य स्थापित किया हर्ष के कार्य भी ऐसे ही थे। इसीलिए हर्ष को सम्राट अशोक और अकबर के बीच की कड़ी कहा गया है।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार लिखने पर 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

समुद्र गुप्त की गणना भारतवर्ष के महान विजेताओं में की जाती है। वह एक साहसी यौद्धा और महान विजेता था। उसने अपनी महान विजयों से छिन्न–भिन्न भारत को एक बार पुनः संगठित कर दिया था। मौर्य सम्राट अशोक के पश्चात उसने अपनी दिग्विजयों से संपूर्ण भारत ाके एकता के सूत्र में बांध दिया। इसीलिए इतिहासिकार बी.ए. स्मिथ ने उसे भारतीय नेपोलियन की संज्ञा दी है। दोनों महान विजेता थे, दोनों ने विशाल साम्राज्य का निर्माण किया। किन्तु हम समुद्र गप्त को नेपोलियन से ज्यादा महान कहेंगे। क्योंकि समुद्र गुप्त अपने विजय अभियान में कभी भी असफल नहीं रहा, सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत किया जबकि नेपोलियन अनेक बार पराजित हुआ और बन्दी जीवन व्यतीत करते हुए उसकी मृत्यु हुई। नेपोलियन का साम्राज्य उसके जीवनकाल में ही छिन्न–भिन्न हो गया था परंतु समुद्रगुप्त का साम्राज्य उसके

बाद भी कई वर्षों तक स्थायी रहा। समुद्र गुप्त सर्वगुण संपन्न था, युद्ध कला के अतिरिक्त वह संगीत कला तथा साहित्य का प्रेमी था।

(उपरोक्तानुसार लिखने पर 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 8. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए निम्नलिखित कार्य किये :–

1. बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को आचरण में लाना।
2. बौद्ध धर्म को राजकीय धर्म घोषित किया।
3. धर्म महामात्रों की नियुक्ति।
4. धर्मयात्राएं की गई।
5. धार्मिक सिद्धांतों को शिलाओं और स्तम्भों आदि पर अंकित करवाया।
6. धर्म के व्यावहारिक पक्ष पर जोर दिया।
7. बौद्ध मठों, स्तूपों व विहारों का निर्माण कराया।
8. लोक कल्याणकारी कार्यों का आयोजन।
9. तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन।
10. बौद्ध धर्म का विदेशों में प्रचार।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दु में से 8 बिन्दुओं को लिखने पर प्रत्येक पर ½ अंक एवं चार बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

गांधार कला की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है :–

1. गांधार कला के विषय भारतीय तथा तकनीक यूनानी है।
2. गांधार कला की मूर्तियां प्रायः स्लेटी पत्थर से निर्मित है।
3. इस कला में बुद्ध को सिंहासन पर बैठे हुए एवं चप्पल धारण किए हुए दर्शाया गया है।
4. इस कला के अन्तर्गत महात्मा बुद्ध के केश व उष्णीश दिखाए गए है तथा वे आभूषण भी धारण किए हुए है।

5. यूनानी प्रभाव के कारण गांधार कला की मूर्तियों में महात्मा बुद्ध अपोलो देवता की तरह लगते है।
6. गांधार कला की मूर्तियों में मोटे व सिलवटदार वस्त्र दिखाए गए है।
7. इस शैली के अन्तर्गत निर्मित स्तूप अत्यंत ऊंचे है।

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दु में से 4 बिन्दु पर लिखने पर 4 अंक, प्रत्येक पर 1 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 9. 'राजपूत' शब्द संस्कृत भाषा के राजपुत्र का अपभ्रंश है। इनकी उत्पत्ति कैसे हुई इस संबंध में विद्वान एकमत नहीं है। राजपूतों की उत्पत्ति से संबंधित प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार है :–

1. **राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से हुई थी** :– चन्दवरदायी कृत पृथ्वीराज रासो के आधार पर इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया है। ऋषियों के यज्ञ में दैत्यों द्वारा बाधा पहुंचाने पर ऋषि वशिष्ठ ने अग्निकुण्ड तैयार किया जिसमें से प्रतिहार, चालुक्य, परमान और थह्मान की उत्पत्ति हुई इन्हें ही आगे चलरक राजपूत कहा गया।
2. **विदेशी थे** :– बाहरी आक्रमणकारी जैसे शक, सीथियन भारत में आए और यहीं रच–बस गए। यहां के रीति–रिवाजों को अपना लिया, यही राजपूत कहलाए। कर्नल टॉड, बी.ए. स्मिथ, भण्डारकर इस मत के समर्थक है।
3. **वीर जातियों से प्रादुर्भाव** :– कुछ विद्वानों का मत है कि राजपूत न तो पूण रूप से भारतीय थे न ही पूर्ण रूप से विदेशी थे। विदेशों से आने वाली वीर जातियों के भारतीय समाज में मिल जाने से एक नवीन वर्ग राजपूत का प्रादुर्भाव हुआ।
4. **भारतीय क्षत्रियों की संतान** :– गौरीशंकर ओझा, दशरथ शर्मा, के.एस. आयगर आदि के अनुसार राजपूत प्रान्तीय क्षत्रियों के वंशज थे। जैसे

अभिलेखों में प्रतिहारों को सूर्यवंशीय व चन्देलों को चन्द्रवंशीय क्षत्रिय कहा गया है।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं को लिखने पर प्रत्येक पर 1 अंक एवं कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

चोल शासक अपनी कलात्मक प्रवृत्ति के लिए प्रसिद्ध है। ये महान निर्माता थे उनके शासन काल में अनेक नगर, झील, बांध, तालाब आदि निर्मित किए गए। स्थापत्य कला व मूर्तिकला अपने शिखर पर थी। अनेक मंदिरों का निर्माण किया गया। विजयालय, चोलेश्वर मंदिर, जागेश्वर मंदिर, कोरंगनाथ मंदिर आदि चोल कला के उत्कृष्ट नमूने है।

चोल कालीन मंदिर–निर्माण कला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरा तंजौर का वृहदीश्वर मंदिर है। यह शिव मंदिर है इसका निर्माण चोल शासक राजराज प्रथम ने लगभग 1000 ई. में करया था। यह 180 फीट लम्बा और 196 फीट ऊंचा है। इसके बाद गंगैकोण्ड चोल पुरम का मंदिर प्रमुख जिसका निर्माण राजेन्द्र प्रथम के शासनकाल में हुआ था। इसका शिखर 150 फीट ऊंचा है। मूर्तिकला का भी पर्याप्त विकास हुआ। चोल कालीन मूर्तियों में शिव की नटराज रूपी कांस्य मूर्तियां विश्व प्रसिद्ध है।

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर 2 + 2 = 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 10. नूरजहां जहांगीर की पत्नी थी। वह अत्यंत सुंदर स्त्री थी। उसने जहांगीर को प्रेमपाश में इतना जकड़ लिया था कि शासन का कोई भी कार्य नूरजहां की अनुमति के बिना नहीं हो सकता था। जहांगीर अपनी आयु तथा बुरे स्वास्थ्य के कारण शासन में निष्क्रिय हो गया और शासन की सत्ता नूरजहां को सौंप दी। नूरजहां शाही झरोखे से जनता को दर्शन दिया करती थी और प्रत्यक्ष रूप से

राज्य का संचालन करने लगी। नूरजहां ने अपने संबंधियों को उच्च पदों पर नियुक्त किया। पिता ग्यासबेग एत्मादुद्दौला, भाई आसफ खां तथा अपने दामाद शहरयार को उच्च पद प्रदान किये। जितने भी शाही फरमान जारी किये जाते थे उन पर जहांगीर के साथ नूरजहां के हस्ताक्षर होते थे। सिक्को पर नूरजहां का नाम अंकित होने लगा। अतः हम कह सकते है जहांगीर के शासन में नूरजहां वास्तविक शासक थी।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर 2 + 2 = 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण निम्न थे :–

1. **औरंगजेब की धार्मिक नीति** :– औरंगजेब ने हिन्दुओं पर जजिया कर लगाये, उन्हें बलात् इस्लाम धर्म स्वीकार करने हेतु प्रयास किये। राजपूतों पर अविश्वास किया। अनेक हिन्दू मंदिरों को नष्ट करवाया, मंदिर के जीर्णोद्वार पर प्रतिबंध लगा दिया। फलस्वरूप हिन्दू औरंगजेब के विरूद्ध हो गये इस प्रकार मुगल साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त हुआ।
2. **औरंगजेब की दक्षिण नीति** :– बीजापुर तथा गोलकुण्डा राज्यों का अंत होने से मराठे सीधे मुगल प्रांतों पर आक्रमण करने लगे। औरंगजेब उनका दमन न कर सका। उसने 25 वर्ष दक्षिण में बिताये, अपार धन व्यय हुआ सेना नष्ट हुई प्रशासन छिन्न–भिन्न हो गया। फलस्वरूप मुगल साम्राज्य पतन के मार्ग की ओर अग्रसर हुआ।
3. **विदेशियों के आक्रमण** :– नादिरशाह, अहमद शाह अब्दाली तथा ईस्ट इण्डिया कंपनी के आक्रमणों ने मुगलों की बची शक्ति को नष्ट कर दिया।
4. **औरंगजेब के बाद के सम्राटों का अयोग्य होना** :– औरंगजेब के बाद के सभी मुगल सम्राट अयोग्य और निकम्मे निकले। उनमें प्रशासनिक योग्यता

नहीं थी। फलस्वरूप अमीरों एवं सरदारों नेअपने–अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिये।

(उपरोक्तानुसार एवंअन्य कोई 4 बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 11. चौथ तथा सरदेशमुखी मराठा द्वारा लिये जाने वाले एक प्रकार के कर थे, जिनमें मराठा राज्य को सर्वाधिक आय प्राप्त हुआ करती थी।

चौथ :– यह पड़ोसी राज्य की आय का चौथा भाग होता था जिसे वसूल करने के लिए शिवाजी उन पर आक्रमण करते थे। चौथ प्रतिवर्ष वसूल की जानी थी चौथ के संबंध में इतिहासकार जे.एस. सरकार ने लिखा है ''चौथ विजिता प्रदेशों से वसूल की जानी थी और उसके बदले में उस प्रदेश को बाह्म आक्रमणों से रक्षा करने का आश्वासन दिया जाता था।

सरदेशमुखी :– एक प्रकार का कृषि कर था जो कुल राजस्व का 10 प्रतिशत वसूल किया जाता था। इसका संग्रह करने के लिए ग्राम व जिला अधिकारी नियुक्त किये गये। ये देशमुख या भूमि अधिकारी कहे जाते थे।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर 2 + 2 = 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

पुरन्दर की संधि 1665 ई. में शिवाजी एवं जयसिंह के बीच हुई। संधि की शर्तें इस प्रकार है :–

1. शिवाजी ने अपने 35 दुर्गों में से चार लाख होण की आय वाले 23 दुर्ग मुगल सम्राट को दे दिये।
2. एक लाख होण की वार्षिक आय आने वाले 12 दुर्ग शिवाजी के पास छोड़ दिये गये।
3. शिवाजी को यह स्वीकृति देनी पड़ी कि उनका पुत्र सम्भाजी पांच हजार का मनसबदार बनकर मुगल सेवा में रहेगा।

4. शिवाजी मुगलों के पक्ष में बीजापुर से युद्ध करेंगे।
5. कोंकण और बालाघाट का प्रदेश यदि शिवाजी जीत लेंगे तो वह उनके पास रहेगा और इसके बदले में वे 13 किश्तों में चार लाख द्रोण मुगल सम्राट को देंगे।

शिवाजी के लिए यह संधि अपमान जनक थी किन्तु विषम परिस्थितियों में अतिआवश्यक थी। कूटनीति एवं दूरदर्शिता से काम लेकर उन्होंने अपने राज्य को विनष्ट होने से बचा लिया।

(उपरोक्तानुसार एवंअन्य कोई 4 बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 12. आधुनिक काल के इतिहास जानने के स्त्रोत :–

1. **कंपनी दस्तावेज एवं अभिलेखीय सामग्री** :– तत्कालीन वायसरायों और भारत सचिवों के अधिकांश निजी कागजात माइक्रो फिल्मों के रूप में ''नेशनल आर्काइब्ज ऑफ इंडिया, नई दिल्ली और नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी नई दिल्ली के पास सुरक्षित है।
2. **निजी दस्तावेज, जीवनी साहित्य तथा संस्मरण** :– निजी दस्तावेजों के अन्तर्गत भारतीय राजनीतिज्ञों एवं देशी रियासतों के निजी दस्तावेज, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की निजी पत्रावलियां आदि। जीवनी साहित्य में महात्मा गांधी की 'स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिएंस विथट्रूथ, नेहरू की 'ऐन आटोबायीग्राफी', सुभाषचन्द्र की 'दि इंडियन स्ट्रगल' आदि।
3. **समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं** :– तत्कालीन समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं भी महत्वपूर्ण स्त्रोत है, उदाहरण – टाइम्स ऑफ इंडिया, मद्रास मेल, पायनियर, द हिन्दू, कॉमनवील, यंग इंडियन, अमृत बाजार पत्रिका, केसरी, आज, इत्यादि।

4. **पुस्तकें :–** आधुनिक भारत, स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम, ए नेशन इन मेकिंग, इंडिया टुडे, आज का भारत, आर्य समाज, हिस्ट्री ऑफ इंडिया, नेशनल कांग्रेस इत्यादि आधुनिक काल के इतिहास को जानने के साधन है।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार एवंअन्य कोई 4 बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

प्लासी के युद्ध के बाद बंगाल पर अंग्रेजों की सत्ता स्थापित हुई। लेकिन उसके लिए अनेक समस्या थी। बक्सर ने युद्ध में इन समस्याओं को समाप्त किया। बक्सर के युद्ध का भारतीय इतिहास में विशेष स्थान है। यह युद्ध अंग्रेजों के युद्ध कौशल का प्रमाण है। अंग्रेजों ने यह युद्ध छल कपट से नहीं बल्कि पराक्रम से जीता था। इसमें यह स्पष्ट हो गया था कि बंगाल का सैनिक संगठन दोषपूर्ण है। इस युद्ध में बंगाल और बिहार पर अंग्रेजो की सत्ता पूर्ण रूप से स्थापित हो गई। प्लासी के बाद मीरजाफर ने कलकत्ता पर उनका अधिकार स्वीकार कर लिया था उसके दरबार में एक ब्रिटिश रेजीडेण्ट रहने लगा था। कंपनी को सिक्के ढालने का अधिकार मिल गया था। अपनी सेना के लिए उसे एक जागीर मिल गई थी। इन सब उपलब्धियों के बाद भी कंपनी की कोई कानूनी स्थिति नहीं थी उसकी हैसियत लुटेरों की सी थी।

बक्सर ने स्थिति बदल दी इलाहबाद की संधि से बंगाल बिहार और उड़ीसा कंपनी के चंगुल में आ गया। जब बंगाल का नवाब अंग्रेजों के हाथों की कठपुतली, अवध का नवाब उन पर निर्भर रहने वाला मित्र, मुगल सम्राट उनका पेंशनर बन गया था। इस युद्ध ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को मजबूत कर दिया। मुगल सम्राट भी कंपनी के चंगुल में आ गया। इससे स्पष्ट है कि बक्सर के युद्ध ने प्लासी के अपूर्ण कार्य को पूरा किया।

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर 2 + 2 = 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 13. मुद्राएं तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक आर्थिक स्थिति एवं कला पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है :–

1. **तिथि निर्धारण :–** मुद्राएं बताती है कि किस वर्ष में उन्हें बनाया गया। मुद्राओं से पता लागया जा सकता है कि किस राजा ने कब तक राज्य किया। मुद्राओं को जारी करने वाले शासक की तिथि के विषय में जानकारी मिलती है।
2. **राज्यों की सीमाओं का निर्धारण** :– मुद्राओं की प्राप्ति के स्थानों के आधार पर राज्यों की सीमाओं का निर्धारण किया जा सकता है। यदि किसी शासक की एक ही स्थान पर बहुत सारी मुद्राएं प्राप्त होती है तो इससे स्पष्ट है कि वह स्थान उस शासक के साम्राज्य का अंग रहा होगा। जिस स्थान से मुद्राएं कम मात्रा में मिलती है तो माना जाता है कि वह स्थान उस शासक के साम्राज्य का प्रत्यक्ष अंग नहीं रहा होगा बल्कि राज्य के व्यापारिक संबंध रहे होंगे।
3. **राज्य की आर्थिक स्थिति का ज्ञान** :– मुद्राओं की धातु से संबंधित राज्य की आर्थिक स्थिति का ज्ञान होता है। गुप्त सम्राटों की स्वर्ण मुद्राओं की शुद्ध धातु राज्य की समृद्धि बताती है। स्कंदगुप्त की स्वर्ण मुद्राओं में घटती हुई धातु की शुद्धता से राज्य के आर्थिक संकट का पता चलता है।
4. मुद्राओं पर उत्कीर्ण विभिन्न देवी–देवाओं के चित्रों से तत्कालीन धर्म के विषय में जानकारी मिलती है। उदाहरण– सिंधु सभ्यता की मुहरों पर मातृदेवी अंकित है।
5. **विदेशों से संबंध** :– विदेशों में भारतीय मुद्राओं के प्राप्त होने से प्राचीन भारतीय शासकों के अन्य देशों से व्यापारिक संबंधों का पता चलता है। उदाहरण– रोम में सिंधु सभ्यता की मुहरों का पाया जाना।
6. **व्यक्तिगत रूचि :–** मुद्राओं से शासकों की उपाधियों उदाहरण– चंद्रगुप्त का व्याघ्र पराक्रम का अंकन, समुद्रगुप्त का वीणा वादन चित्र, अश्वमेघ पराक्रम

का अंकन इनमें व्यक्तिगत रूचि एवं कला के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

पुरापाषाण काल एवं नवपाषाण काल में अन्तर :–

क्र.	विवरण	पुरापाषाण काल	नवपाषाण काल
1	औजार	इस काल में मानव के औजार पत्थर और हड्डियों के बने होते थे। ये औजार भद्दे, बेडोल तथा खुरदरे होते थे। उदा.– कुल्हाड़ी, गडासा, चाकू।	इस काल में मानव के औजार व हथियार पत्थरों के चिकने, चमकदार, तेज व नुकीले होते थे।
2	भोजन एवं वस्त्र	इस काल का मानव शिकारी था। अनाज का संग्राहक था। इस काल के मानव का भोजन मांस व कंदमूल था। इस काल का मानव वृक्षो की छाल पत्तो और पशुओं की खाल से अपना शरीर ढकता था।	इस काल में मानव ने कृषि करना सीख लिया था। मानव पशुपालक बन गया था। अनाज का उत्पादनकर्ता बन गया था। मानव दूध दही अनाज शहद एवं मांस आदि का भोजन करने लगा। इस काल में कपास का उत्पादन करने लगा था तथा वस्त्र बनाए जाने लगे थे।
3	निवास	इस काल का मानव वृक्षों	इस काल में मानव ने घासफूंस

	स्थान	की शाखाओं तथा गुफाओं में रहता था।	व मिट्टी के आवास बनाना शुरू कर दिया था।
4	बर्तन	इस काल का मानव बर्तन बनाने की कला से अपरिचित था।	इस काल में चाक (पहिए) के अविष्कार से मानव बर्तन आदि बनाने लगा था।
5	कृषि	इस काल का मानव कृषि से अपरिचित था।	इस काल में मानव ने कृषि करना आरंभ कर दिया था। कृषि उपज के रूप में गेहूं, चावल, मटर आदि अनाज उगाने लगा था।
6	सामान्य जीवन	इस काल का मानव खाना बदोशी का जीवन बिताता था। इनका कोई परिवार नहीं होता था।	नव पाषाण काल में परिवार प्रथा आरंभ हो गई इस काल के मानव एक निश्चित स्थान पर सामूहिक रूप से रहने लगे थे जिसके परिणाम स्वरूप बस्तियों की नींव पड़ी।

(उपरोक्तानुसार वर्णन करने पर 2½ + 2½ = 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 14. मुहम्मद बिन तुगलक एक योजनाशील मस्तिष्क का स्वामी था। सिंहासन पर बैठते ही उसने शासन के सफल संचालन की योजनाएं बनाना शुरू कर दियाः–

1. **राजधानी परिवर्तन** :– 1326 ई. मुहम्मद तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्ली से दौलताबाद बनाने का निर्णय लिया। उसने मंगोल आक्रमणों से सुरक्षा तथा देवगिरि का राज्य के मध्य में होने के कारण तथा दक्षिण की धन संपन्नता से प्रभावित होकर राजधानी बदलने का निर्ण्य लिया था। उसने दिल्ली से दौलताबाद तक 800 मील में सड़क तथा बीच–बीच में सरायों का

निर्माण करवाया पूरा कार्यालय तथा सभी लोगों को दौलताबाद जाने के लिए विवश किया। लम्बी यात्रा तथा अनेक कष्ट के कारण अनेक लोग रास्ते में मर गये। लोगों की थकान भी न उतरी तुरंत वापिस लौटने का आदेश दिया। इससे लोगों को बहुत परेशानी हुई तथा धन, समय व शक्ति का अपव्यय हुआ। राजधानी परिवर्तन की यह योजना अन्नतः असफल हो गई।

2. **दो आब में कर वृद्धि** :– गंगा और यमुना के मध्य का भाग दोआब प्रदेश अत्यधिक उपजाऊ था। अतः सुल्तान ने इस प्रदेश में भूमि 50 से 60 प्रति तक बढ़ा दिये। दोआब हिन्दू बाहुल्य क्षेत्र था। यहां के निवासी धनधान्य से भरपूर थे इसलिए वे विद्रोही प्रवृत्ति के हो गये थे इन्हें दबाना भी जरूरी था। जैसे ही कर वृद्धि की योजना लागू की गई वैसे ही दोआब में भयंकर अकाल पड़ गया। फिर भी बलपूर्वक सुल्तान के कर्मचारियों के द्वारा कर की वसूली की जाती रही। अतः यहां के लोग गांव छोड़कर जंगल की ओर भागने लगे। अकाल की सूचना मिलने पर सुल्तान ने राहत भी पहुंचाई परंतु कोई इसका उपभोग करने वाला नहीं बचा। यह योजना असफल हो गई।
3. **सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन** :– मुहम्मद तुगलक ने सोने–चांदी के स्थान पर तांबे के सिक्के चलाने का निर्णय लिया। किन्तु टकसाल पर एकाधिकार न होने से घर–घर टकसाल बन गया। फलतः योजना विफल रही और सुल्तान को बहुत नुकसान हुआ।
4. **कृषि विभाग का निर्माण** :– मुहम्मद तुगलक ने एक कृषि विभाग का निर्माण किया जो दीवाने कोही के नाम से प्रसिद्ध था। इसका उद्देश्य बंजर भूमि को खेती के योग्य बनाना था। किन्तु सुल्तान की यह योजना भी असफल रही।

5. विजय योजनाएं :–

1. **नगर कोट विजय :–** नगर कोट को जीतने के बाद तुगलक ने वहां के राजा के साथ उदारता का बर्ताव किया और उसको किला वापस कर दिया। इस कारण उसे तीव्र आलोचना का शिकार होना पड़ा।
2. **कराजल विजय :–** कराजल पर आक्रमण 1337–38 ई. प्रारंभ में सेना को सफलता मिली लेकिन तभी भयंकर आंधी तूफान और वर्षा आ जाने के कारण उसकी अधिकांश सेना नष्ट हो गई।
3. **खुरामान :–** आक्रमण करने के पहले ही वहां स्थिति सुधर गई। फलस्वरूप चार लाख पचहत्तर हजार सैनिकों का खर्च खजाने से उठाना पड़ा। अंत में इस योजना का परित्याग से घोर निराशा उत्पन्न हुई।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

भक्ति आंदोलन के प्रभाव :–

1. **हिन्दुओं में आशा तथा साहस का संचार :–** भक्ति आंदोलन से हिन्दुओं में आत्म बल का संचार हुआ। जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दुओं की निराशा दूर हुई और हिन्दू अपनी सभ्यता व संस्कृति को बचाने में सफल रहें।
2. **मुसलमानों के अत्याचारों में कमी :–** भक्ति आंदोलनो के संतों द्वारा प्रतिपादित शिक्षाओं व उपदेशों का प्रभाव मुस्लिम शासक पर पड़ा। विभिन्न धर्मों के मध्य एकता स्थापित हुई, जिससे मुसलमानों के अत्याचार कम हो गए।
3. **बाहरी आडम्बरों में कमी :–** भक्ति आंदोलन के सभी संतों ने अपने उपदेशों में आडम्बरों की निंदा की और पवित्रता पर बल दिया। इन उपदेशों का

प्रभाव यह हुआ कि लोग बाहरी आडम्बरों को त्यागकर सरल जीवन की ओर अग्रसर हुए।

4. **वर्गीयता तथा संर्कीणता पर आघात :–** भक्ति आंदोलन में संतों ने ऊंच–नीच, छूत–अछूत का भेदभाव दूर करने का प्रयत्न किया जिसके परिणाम स्वरूप समाज में व्याप्त वर्गीयता और संर्कीणता को आघात लगा।
5. **आत्म गौरव एवं राष्ट्र भावना का प्रादुर्भाव :–** भक्ति आंदोलन के संतों की ओजस्वी वाणी ने मनुष्य में आत्म गौरव एवं राष्ट्र भावना का संचार किया जिसके परिणाम स्वरूप कालान्तर में महाराष्ट्र, पंजाब आदि में राष्ट्रीय आंदोलनों का प्रादुर्भाव हुआ।
6. **प्रांतीय भाषाओं का विकास :–** भक्ति आंदोलनों के संतों ने अपने–अपने उपदेश लोकभाषाओं में प्रचारित किए फलस्वरूप प्रांतीय भाषाओं– हिन्दी, मराठी, बंगाली, पंजाबी आदि का विकास हुआ।

(उपरोक्तानुसार 5 बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 15. दीन–ए–इलाही धर्म के सिद्धांत :– अकबर एक धर्म सहिष्णु सम्राट था। उसने धर्म के क्षेत्र में एक नवीन प्रयोग किया और विभिन्न धर्मों की अच्छाईयों को लेकर 1582 ई. में एक नवीन धर्म की स्थापना की जो दीन–ए–इलाही धर्म के नाम से जाना गया। इस धर्म में दीन का अर्थ है धर्म और इलाही का अर्थ है ईश्वर। इस प्रकार दीन–ए–इलाही का अर्थ ईश्वर का धर्म हुआ।

इस धर्म की प्रमुख विशेषताएं एवं सिद्धांत निम्नलिखित है :–

1. ईश्वर एक है तथा अकबर उसका पैगम्बर व नेता है।
2. सभी सदस्यों को अकबर को साष्टांग प्रणाम करना आवश्यक था।
3. प्रत्येक व्यक्ति अपने जन्म दिवस पर भोज का आयोजन करता था।
4. दीन–ए–इलाही मानने को जीवित रहते ही श्राद्ध स्वयं करना पड़ता था।
5. इसके अनुयायियों के लिये मांस खाना निषेध था।

6. इस धर्म के अनुयायी सूर्य व अग्नि की उपासना करते थे।
7. इस धर्म को रविवार के दिन ही स्वीकार किया जाता था।
8. दाढ़ी रखना प्रतिबन्धित था, दान व उदारता का पालन करना आवश्यक था।
9. इस धर्म के अनुयायियों का उसकी इच्छानुसार जलाया या दफन किया जाता था।
10. इस धर्म को मानने वाले सदस्यों को परस्पर मिलने पर अल्लाह हो अकबर कहते थे। अकबर का अर्थ महान अतः इसका अर्थ ईश्वर महान होता है।

इस प्रकार देखा गया जाय तो वास्तव में यह कोई एक धर्म नहीं था वरन अनेक धर्मों का मिश्रण था। यह धर्म कभी राज्य धर्म नहीं बना। अकबर की मृत्यु के बाद इसका पतन हो गया।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार दीन–ए–इलाही धर्म के परिचय पर 2 अंक एवं सिद्धांत को लिखने पर 3 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

महाराणा प्रताप मेवाड़ के सिसोदिया वेश के शासक राणा उदयसिंह के पुत्र थे। मेवाड़ के शासकों ने मुगल सत्ता का निरंतर विरोध किया। यद्यपि 1568 ई. में मुगल सम्राट अकबर ने मेवाड़ की राजधनी चित्तोड़ पर अधिकार कर लिया था। फिर भी मेवाड़ का अधिकांश भूभाग राणा उदयसिंह के अधिकार में ही रहा। 1572 ई. में राणा उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र महाराणा प्रताप मेवाड़ के सिंहासन पर आसीन हुए। महाराणा प्रताप ने राजसिंहासन पर बैठते ही शपथ ली कि जब तक मेवाड़ स्वतंत्र नहीं होगा तब तक वह न थाली में खाना खायेंगे और न हीं बिस्तर पर लेटेंगे। महाराणा प्रताप ने आजीवन इस शर्त का पालन भी किया। महाराणा प्रताप द्वारा बार–बार मुगल आधिपत्य को अस्वीकार कर देने के कारण 18 जून 1576 को हल्दीघाटी के मैदान में अकबर और महाराणा प्रताप के मध्य भीषण युद्ध हुआ। जिसमें मुगल सेना के पांव

उखाड़ दिये। लेकिन मुगलों की विशाल सेना के सामने महाराणा प्रताप को पराजित होना पड़ा।

महाराणा प्रताप घायलावस्था में अरावली की पहाड़ियों की ओर चले गये। वह स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करते रहे लेकिन अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। मेवाड़ के कुछ भाग पर अधिकार भी कर लिया था। 1597 में उनकी मृत्यु हो गई। मरते समय अपने पुत्र अमरसिंह को भी अकबर की अधीनता स्वीकार न करने की शपथ दिलाई। जिसका अमर सिंह ने पालन किया और अकबर को मेवाड़ पर अधिकार नहीं करने दिया। इस प्रकार महाराणा प्रताप ने हमेशा मुगलों का प्रतिरोध किया।

(उपरोक्तानुसार वर्णन करने पर 3 + 2 = 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 16. 17वीं शताब्दी में शिवाजी के नेतृत्व में मराठा शक्ति का उत्थान हुआ। मराठों ने केवल मुगलों को चुनौती दी बल्कि एक विशाल मराठा साम्राज्य की स्थापना की। मराठों के उत्कर्ष के निम्नलिखित कारण :–

1. **महाराष्ट्र की प्राकृतिक दशा** :– सहायाद्रि पर्वत श्रेणियों की ऊंची चोटियों एवं स्थूल चट्टानों को मराठों ने अपने परिश्रम से सुरक्षात्मक दुर्गो का रूप दिया। इन्हीं दुर्गों की सहायता से मराठों ने उत्तर की ओर से आने वाले आक्रमणकारियों से अपनी रक्षा की।
2. **धार्मिक जाग्रति** :– 15वीं एवं 16वीं शताब्दी की धार्मिक जागृति का प्रभाव महाराष्ट्र पर भी पड़ा। इस धार्मिक जागृति के विचारक एवं नेता गुरूदास, एकनाथ दामोदर, बामन पण्डित, ज्ञानेश्वर तथा चक्रधर थे। इस धार्मिक जागृति के कारण मराठा सैनिक कर्मयोगी तथा कर्मठ देशभक्त बने।
3. **भाषा की एकता** :– भाषा की एकता से राजनैतिक एवं सांस्कृतिक एकता को बल मिलता है। अतः महाराष्ट्र में भी मराठी भाषा एवं मराठी साहित्य ने लोगों को राष्ट्रीय प्रेम तथा एकता के बन्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्हीं प्रयासों से मराठा जाति एकता के सूत्र में बंधी।

4. **शिवाजी का कर्मठ व्यक्तित्व :–** मराठों के उत्कर्ष में शिवाजी के व्यक्तित्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे न केवल एक योग्य सेनापति बल्कि महान राष्ट्र निर्माता भी थे। शिवाजी ने अपनी व्यक्तिगत वीरता, साहसपूर्ण सुयोग्य नेतृत्व कुशल व्यवहार तथा अपने अथक प्रयासों से बिखरी मराठा जाति को एक करके राष्ट्रीयता की भावना का संचार हुआ। सर यदुनाथ सरकार के अनुसार शिवाजी भारत के अन्तिम हिन्दू राष्ट्र निर्माता थे। जिसने हिन्दुओं के मस्तक को एक बार फिर ऊंचा उठाया।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार शिवाजी के विषय में लिखने पर 1 अंक एवं चार बिन्दु पर वर्णन किये जाने पर 4 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

शिवाजी एक कुशल सैनिक विजेता तथा मराठा साम्राज्य के निर्माता होने के साथ–साथ एक कुशल प्रशासक भी थे। शिवाजी राज्य के सर्वोच्च अधिकारी थे तथा राज्य की समस्त शक्तियां उन्हीं के हाथों में केन्द्रित थे। शिवाजी के चरित्र की निम्न विशेषताएं है :–

1. **आदर्श तथा उच्च व्यक्तित्व :–** शिवाजी का व्यक्तित्व बहुमुखी तथा उच्चकोटि का देश भक्त एवं राष्ट्र निर्माता के रूप में याद किया जाता है। वास्तव में शिवाजी का व्यक्तित्व इतना आकर्षक था कि उनसे मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हो जाता था।
2. **उज्जवल चरित्र :–** शिवाजी का चरित्र अत्यंत उज्जवल था। वे शत्रु की स्त्री को भी मां तथा बहन के समान समझते थे। वे प्रजा की बहू बेटियों को ही नहीं वरन शत्रु की बहू बेटियों को भी अपनी बेटियां मानते थे।
3. **महान संगठनकर्ता :–** शिवाजी एक महान संगठनकर्ता थे। उन्होंने मराठा जाति को संगठित करके उसे एक सैनिक जाति के रूप में परिणित कर दिया।

4. **महान सेना नायक :–** शिवाजी एक महान कुशल सेना नायक थे। वे स्वयं युद्ध का संचालन बड़ी कुशलता के साथ करते थे।
5. **महान विजेता :–** शिवाजी एक महान सेना नायक होने के साथ–साथ एक महान विजेता भी थे। 1656 ई. में शिवाजी ने जावली पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया। 1674 में राज्याभिषेक के पश्चात शिवाजी पेड़गांव, भूताल छावनी, फर्ली तथा कोल्हापुर पर जीत दर्ज की।
6. **कुशल प्रशासक** :– वह केवल एक साहसी तथा सफल सैनिक विजेता ही नहीं वरण अपनी प्रजा के बुद्धिमान शासक भी थे। शिवाजी जनता की सेवा को ही अपना धर्म समझते थे। शिवाजी ने जमींदारी, जागीरदारी तथा ठेकेदारी प्रथा को पूर्णतया समाप्त कर दिया।

(शिवाजी के विषय में संक्षिप्त लिखेन पर 1 अंक एवं उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं पर विस्तार देने पर अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 17. भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की व्यापारिक तथा आर्थिक नीति से अंग्रेजी शासन के काल में भारतीय परम्परागत अर्थ व्यवस्था का विनाश प्रारंभ हो गया। आर्थिक प्रभाव निम्नांकित है :–

1. **देशी राजाओं तथा नवाबों का अंत :–** देश के राजे–महाराजे और नवाब आदि उद्योगों के बड़े हितैषी तथा संरक्षक थे। उद्योगों को जो राजदरबारों से संरक्षण सहारा मिलता था वह छिन गया। इस प्रकार से देशी उद्योगों को गहरी ठेस लगी।

2. **दस्तकारों पर अत्याचार** :– ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजनीतिक सत्ता प्राप्त करते ही भारत के कारीगरों अथवा बुनकरों पर अनेक अत्याचार आरंभ कर दिये। इससे जुलाहों को बहुत घाटा हुआ।

3. **कच्चे माल पर नियंत्रण :–** अंग्रेजों ने भारत के कच्चे माल पर अपना पूरा नियंत्रण स्थापित करने का प्रयत्न किया। भारतीयों से सस्ते दाम पर माल खरीद कर ले जा रहे थे और कपड़ा लाकर महंगे दाम पर देते थे।

4. **भारतीय बाजार पर विदेशी वस्तुओं का आधिपत्य :–** विदेश में औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप वहां का आर्थिक ढांचा बदल गया और एक शक्तिशाली और औद्योगिक वर्ग का जन्म हुआ। जिसका उद्देश्य ब्रिटिश उद्योगों का अधिक से अधिक विकास करना था। इस कारण से भारतीय बाजार पर इंग्लैण्ड के बने माल का कब्जा हो गया।

5. इंग्लैण्ड की सरकार द्वारा रेशमी तथा सूती कपड़ों के आयात पर प्रतिबंध।

5 अंक

(इस्ट इंडिया की आर्थिक नीति पर संक्षिप्त में लिखने पर 1 अंक एवं 4 बिन्दुओं को विस्तार देने पर 4 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

19वीं शताब्दी में निम्नलिखित परिस्थितियों के कारण भारत में पुनर्जागरण प्रारंभ हुआ :–

1. **सामाजिक, धार्मिक कुरीतियां :–** 19वीं शताब्दी का भारतीय समाज अनेक समाजिक तथा धार्मिक कुरीतियों से ग्रस्त था। सामाजिक क्षेत्र में छुआ–छुत, सती प्रथा, बाल विवाह तथा विधवा विवाह निषेध का प्रचलन तथा धर्म के क्षेत्र में अनेक कर्मकाण्डों तथा अन्धविश्वासों का प्रचलन था।
2. **सुधारकों का प्रभाव :–** 19वीं शताब्दी में भारत में अनेक ऐसे धर्म सुधार हुए जिन्होंने अपनी विचार धारा व कार्यों से भारतीय जन–जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
3. **पाश्चात्य संस्कृति का संपर्क :–** भारत में अंग्रेजों के आने से देश में प्राश्चात्य साहित्य, दर्शन और विचारों का प्रसार हुआ।

4. **ईसाई मिशनरियों का प्रभाव** :– ईसाई पादरी सर्वसाधारण जनता में धर्म की संकीर्णता तथा पिछड़ेपन पर भाषण देते थे। जिससे हिन्दुओं के अपने पतन के कारणों का ज्ञान हुआ।
5. **समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का योगदान** :– समाचार पत्र–पत्रिकाओं ने भारतीयों को अंग्रेजो के व्यवहार, शोषण व क्रूरता से अवगत कराया, साथ भारतीयों में आत्म सम्मान एवं सुरक्षा की भावना जाग्रत की। सुधार आंदोलनों की पृष्ठभूमि तैयार करने में समाचार पत्र–पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई बिन्दुओं पर विस्तार दिये जाने पर प्रत्येक पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 18. राजाराम मोहन राय का जन्म बंगाल में एक ब्राहमण परिवार में 22 मई 1774 में हुआ था। वह बड़े क्रांतिकारी विचारों के थे। उन्होंने 15 वर्ष की आयु में ही एक छोटी सी पुस्तक लिखी थी। जिसमें उन्होंने मूर्तिपूजा पर प्रहार किया था। इसके कारण से परिवार के लोगों ने उन्हें घर से निकाल दिया। उन्हें इधर–उधर भटकना पड़ा लेकिन इस दौरान उन्होंने कई भाषाएं सीख ली। राजाराम मोहन राय प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। उन्होंने जीवन के प्रत्येक पहलु को सूक्ष्म दृष्टि से देखा। समाज सुधारक और धर्म सुधारक के रूप में वह अधिक प्रसिद्ध हुए। इसलिए उन्हें भारतीय समाज का पुनर्जागरण का अग्रदूत भी कहा जाता है।

राजाराम मोहन राय ने ब्रम्ह समाज की स्थापना की जिसके प्रमुख उद्देश्य हैः–

1. हिन्दू धर्म को उदार बनाना व धर्म का वास्तविक ज्ञान कराना।
2. भारतीय धर्म और सभ्यता को रूढ़िवाद, अन्धविश्वासों और बाह्य आडम्बरों से बचाना।
3. हिन्दू धर्म की पश्चिमी सभ्यता और उसके आक्रमणों से रक्षा करना।
4. सती प्रथा को अमानवीय मानकर उनके विरूद्ध प्रचार करना।
5. बाल विवाह का विरोध करना और विधवा विवाह का प्रचार करना।

राजाराम मोहन राय को सभी दृष्टियों से एक महान व्यक्ति कहा जा सकता है। वास्तव में रूढ़िग्रस्त भारतीय जनता को अज्ञान के अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले राजाराम मोहन राय भारतीय सुधार आन्दोलन के अग्रदूत और भारत के जनक कहे जा सकते है।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार राजा राम मोहन राय पर लिखने पर 3 अंक एवं 4 बिन्दुओं को लिखने पर 2 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

1857 की क्रांति की विफलता के निम्नलिखित कारण है :–

1. **आधुनिक अस्त्र–शस्त्रों का अभाव :–** 1857 की क्रांति की विफलता का प्रमुख कारण क्रांतिकारियों के पास पुराने ढंग के अस्त्र–शस्त्रों का होना था। अन्य शब्दों में क्रांतिकारी आधुनिक अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित नहीं थे जबकि अंग्रेजों के पास आधुनिक ढंग की रायफलें और तोपें थी।
2. **निर्धारित तिथि से पूर्व क्रांति का आरंभ होना :–** क्रांति निर्धारित तिथि से पूर्व आरंभ हो गई थी। क्रांति का प्रारंभ 31 मई 1857 को होना था परंतु चर्बी वाले कारतूसों की समस्या के कारण 10 मई को ही सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। यदि क्रांति निर्धारित समय पर होती तो भारतीयों को निश्चित सफलता मिलती। लेकिन अंग्रेजों को सफलता मिली भारतीय असफल हो गये।
3. **प्रशिक्षित सेना का अभाव :–** अंग्रेजी सेना उचित ढंग से प्रशिक्षित थी तथा युद्ध कला में पूर्णतया निपुण थी। परंतु भारतीय सैनिक उचित प्रकार से प्रशिक्षित नहीं थे।
4. **डाक–तार विभाग पर अंग्रेजों का नियंत्रण :–** भारत की डाक तार व्यवस्था पर अंग्रेजों का ही नियंत्रण था। अतः वे सरलता तथा शीघ्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर सूचनाएं भेजकर आवश्यक संदेश तथा स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर लेते थे। जबकि भारतीयों के पास ऐसे कोई साधन नहीं थे।

5. **कुशल नेतृत्व का अभाव :–** कुशल नेतृत्व का अभाव भी क्रांति की विफलता का प्रमुख कारण था। यह सत्य है कि झांसी की रानी, तात्या टोपे तथा नाना साहब जैसे अनेक क्रांतिकारी नेता थे लेकिन इनमें से नेृतृतव करने में कोई सफल नहीं रहा।

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 5 कारणों को विस्तार देने पर प्रत्येक पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 19. **प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में मध्यप्रदेश का योगदान :–** म.प्र. के स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख गतिविधियां 1857 की क्रांति से ही प्रारंभ है। 1857 की क्रांति का प्रारंभ मध्यप्रदेश में महाकौशल क्षेत्र से उस समय हुआ जबकि एक भारतीय सैनिक ने अंग्रेजी सेना के एक अधिकारी पर प्राणघातक हमला किया था। इसके पश्चात इस क्रांति का प्रारंभ ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल, सागर, जबलपुर, होशंगाबाद आदि में भी हुआ। म.प्र. में 1857 की क्रांति में प्रमुख योगदान देने वाले क्रांतिकारी थे – तात्याटोपे, महारानी लक्ष्मीबाई, अवन्ती बाई, राणा बख्तावर सिंह, शहीद नारायण सिंह तथा ठाकुर रणपाल सिंह आदि। 1857 के क्रांतिकारियों में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्या टोपे के नाम विशेष उल्लेखनीय है। रानी लक्ष्मीबाई ने देशभक्त विद्रोही सैनिकों का नेतृत्व करते हुए ब्रिटिश सैनिकों को भयभीत कर दिया। झांसी हाथ से निकल जाने पर लक्ष्मीबाई अपने साथी तात्या टोपे की सहायता से ग्वालियर पर अधिकार करने में सफल हुई। उन्होंने बड़े उत्साह से ग्वालियर की जनता को जाग्रत किया। ब्रिटिश सेना ने उनके किले को घेर लिया वे बड़े ही उत्साह से अपनी सेना का संचालन करती हुई युद्ध क्षेत्र में उतर पड़ी परंतु ब्रिटिश सेना के आघात से वे घायल हुई तथा उनका स्वर्गवास हो गया। उनके सामने ही तात्या टोपे ने म.प्र. के अनेक क्षेत्रों में सफलतापूर्वक ब्रिटिश सेनाओं से युद्ध किया परंतु एक विश्वासघाती षड़यंत्र के कारण अंग्रेजों ने उन्हे बन्दी बनाकर फांसी पर चढ़ा दिया।

1857 की क्रांति संपूर्ण भारत में असफल हो गई थी। अतः म.प्र. में उसे सफलता नहीं मिली परंतु यह भी सत्य है कि म.प्र. में इस क्रांति की व्यापकता ने यहां की राष्ट्रीयता की भावना को उच्च स्तर पर पहुंचा दिया था।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

म.प्र. में प्राप्त प्रमुख स्मारकों का परिचय निम्नांकित है :–

1. **भूमरा का शिव मंदिर :–** गुप्त काल भूमरा का शिव मंदिर वास्तुकला का अनुपम नमूना है। म.प्र. के सतना जिलें में भूमरा नामक स्थान पर गुप्तकालीन शिव मंदिर प्राप्त हुआ है।
2. **तिगवा का विष्णु मंदिर** :– तिगवा का विष्णु मंदिर गुप्तकालीन वास्तुकला का सुन्दर नमूना है। म.प्र. के जबलपुर जिले में तिगवा नामक स्थान पर गुप्तकालीन विष्णु मंदिर प्राप्त हुआ।
3. **नचनाकुठार का पार्वती मंदिर :–** म.प्र. में पन्ना जिले में अजयगढ़ के समीप रचना कुठार नामक स्थान है। यहां पार्वती का मंदिर है।
4. **एरण का विष्णु मंदिर :–** म.प्र. सागर जिले के ऐरण नामक स्थान से गुप्तकालीन विष्णु मंदिर के अवशेष मिले है।
5. **सांची का मंदिर** :– म.प्र. में सांची का मंदिर अत्यंत प्राचीन बताया जाता है यह मंदिर प्रारंभिक गुप्त परम्परा में महत्वपूर्ण मंदिर है।
6. **उदयगिरि की गुफाएं** :– म.प्र. के विदिशा जिले में उदयगिरि की 20 गुफाएं स्थित है। ये गुफाएं गुप्तकालीन, स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है। इन गुफाओं को उदयगिरि की पहाड़ियों की पूर्वी ढाल को खोदकर तराशा गया है।
7. **बाघ की गुफाएं :–** म.प्र. के विन्ध्याचल की पहाड़ियों में बाघ की गुफाएं स्थित है।

8. **पिपरिया का विष्णु मंदिर** :– म.प्र. के सतना जिले में उचेहरा के पास पिपरिया नामक स्थान पर विष्णु मंदिर है।
9. **कन्दरिया महादेव का मंदिर** :– यह मंदिर खजूराहों में स्थित है।
10. **भरहुत का स्तूप** :– म.प्र. के सतना जिले में है। यह अशोक द्वारा बनवाया गया।
11. **सांची का स्तूप** :– सांची का स्तूप म.प्र. के रायसेन जिले में है। इसको अशोक द्वारा बनवाया गया था। इसमें महात्मा बुद्ध के दो शिष्यों के अवशेष है।
12. **भर्तुहरि गुफाएं** :– म.प्र. के उज्जैन जिले में बालियादेह महल के पास में है। राजा भर्तुहरि की स्मिृति में परमार देश के शासकों ने बनवाया था।

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य 10 बिन्दुओं को लिखने पर प्रत्येक पर ½ अंक एवं पांच बिन्दुओं के विस्तार पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 20. पुर्तगालियों के पतन के निम्न कारण थे :–

1498 में पुर्तगाली नाविक बास्कोडिगामा का भारत आगमन हुआ। 1505 में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर के रूप में फ्रांसिस्को डी अल्मीड़ा भारत आया। अलबुकर्क द्वारा गोवा को मुख्य कार्य क्षेत्र बनाकर पुर्तगाली प्रभाव की स्थापना की गई। वे साम्राज्य की स्थापना नहीं कर पाये। सोलहवीं शताब्दी के मध्य उनके पतन की प्रक्रिया शुरू हो गई।

1. **अल्बुकर्क के निर्बल उत्तराधिकारी** :– अल्बुकर्क के समान उनके उत्त्राधिकारी योग्य तथा प्रतिभावान नहीं थे। वे अत्यंत स्वार्थी तथा निर्बल थे परिणाम स्वरूप पुर्तगाली साम्राज्य का पतन होना अनिवार्य हो गया।
2. **धार्मिक असहिष्णुता की नीति** :– पुर्तगालियों ने भारत में धार्मिक कट्टरता की नीति का पालन किया। उन्होंने हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को ईसाई बनाने के प्रयास किए। आगे चलकर उन्होंने हिन्दुओं के मंदिरों तक को गिराने के प्रयास किये।

3. **प्रशासनिक दोष :–** पुर्तगाली शासन व्यवस्था अनेक दोषो से ग्रस्त थी। कर्मचारियों को अत्यंत कम वेतन दिया जाता था।
4. **ब्राजील की खोज :–** पुर्तगालियों ने जब दक्षिण अमरीका में ब्राजील की खोज कर ली तो उनका समस्त ध्यान उसे बसाने में लग गया। इस प्रकार भारत के प्रति उनकी रूचि में कमी आ गई।
5. **सीमित साधन** :– पुर्तगालियों ने धार्मिक प्रचार में अपार धन व्यय किया था जिससे राजकीय कोष रिक्त होने लगा था। धन तथा जन दोनों का ही उनके पास अभाव था।
6. **मुगलों का विरोध :–** पुर्तगालियों द्वारा लूटपात करने से मुगल सम्राट क्रोधित हुआ तथा उनका विरोध करने लगा इसके अतिरिक्त मुगलों ने दक्षिण भारत में भी अपने साम्राज्य का विस्तार कर पुर्तगालियों की साम्राज्यवादी नीति को समाप्त कर दिया।

उपरोक्त कारणों से भारत में पुर्तगालियों का पतन हो गया था।

6 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य कारणों को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

22 अक्टूबर 1764 को अंग्रेजों तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला, मीर कासिम तथा मुगल सम्राट के बीच में हुए युद्ध में अंग्रेजो की विजय हुई और दोनों पक्षों के बीच सन् 1765 में इलाहबाद की संधि हुई। जिसकी प्रमुख शर्तें इस प्रकार है:–

1. अंग्रेजों को बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई।
2. कड़ा इलाहबाद के जिलों को छोड़ शेष अवध नवाब को सौंप दिया गया।
3. अंग्रेजी सेना संधि की शर्तें पूरी होने तक अवध में रहेगी, जिसका व्यय नवाब देगा।
4. नवाब 50 लाख रूपये क्षतिपूर्ति के रूप में कंपनी को देगा।

5. कंपनी को अवध में बिना कर दिए व्यापार निश्चित की छूट मिल गई।
6. मुगल सम्राट की पेंशन 26 लाख रूपये निश्चित कर दी गई।

महत्व :–

इलाहबाद की संधि भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना का आधार सिद्ध हुई। यह संधि क्लाइव की महान कूटनीतिक सफलता थी।

1. अंग्रेज अब वास्तविक तथा कानूनी रूप से बंगाल के स्वामी हो गए।
2. अवध का उपजाऊ समृद्ध प्रदेश अब अंग्रेजों की दया पर था।
3. कंपनी को कड़ा इलाहाबाद के उपजाऊ जिले प्राप्त हो गए।
4. मुगल सम्राट कंपनी का पेंशनर बन गया इससे कंपनी की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
5. कंपनी उत्तर भारत की निविर्वाद ताकत बन गई।

(उपरोक्तानुसार इलाहाबाद की संधि की शर्तें लिखने पर 3 अंक एवं महत्व पर 3 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 21. भारत में राष्ट्रीय चेतना के उदय होने के कारण :–

19वीं शताब्दी के अन्त में और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में एक नवीन चेतना का उदय हुआ। इसके मूल कारण निम्नलिखित थे :–

1. **पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार** :– अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से भारत के अनेक भाषा भाषी लोग एक दूसरे के संपर्क में आए इससे राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन मिला।
2. **लार्ड लिटन की अत्याचार पूर्ण नीति** :– लार्ड लिटन ने देशी भाषाओं में छपने वाले समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगाये। उसने देश की संपूर्ण जनता का बल पूर्वक निःशस्त्रीकरण कर दिया। देश में भयंकर अकाल पड़ गया जिसमें लाखों व्यक्ति मर गये। लिटन ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। जिससे जनता में भयंकर रोष पैदा हुआ।

3. **समाज सुधार आंदोलनों का प्रभाव** :– राजाराम मोहन राय ने धर्म को आधुनिक सांचे में ढ़ालकर भारतीय समाज में नव जीवन का संचार किया। स्वामी विवेकानन्द ने स्वशासन पर बल दिया। स्वामी दयानन्द ने भारत की आध्यात्मिक श्रेष्ठता सिद्ध की।
4. **भारत का आर्थिक शोषण** :– अंग्रेजों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रहार किया। भारत के परम्परागत उद्योगों तथा दस्तकारियों का अन्त कर दिया। उद्योगों के पतन के बाद श्रमिक भूखे मरने लगे।
5. **भारतीय समाचार पत्र तथा साहित्य** :– समाचार पत्रों ने जनता का ध्यान देश की दुर्दशा, अंग्रेजों के अत्याचारों तथा दमन की ओर आकर्षित किया और अंग्रेजी सरकार की आलोचना की।
6. **देश में राजनीतिक एकता की स्थापना** :– भारत में राजनीतिक एकता की स्थापना होने के परिणामस्वरूप स्थानीय भक्ति का स्थान देश भक्ति ने ले लिया जिससे स्वतंत्रता का भाव पैदा हुआ।
7. **यातायात के साधनों की उन्नति** :– ब्रिटिश शासनकाल में रेल डाक, तार तथा सड़कों आदि की उन्नति में भी संपूर्ण देश को एक सूत्र में बांध दिया।

6 अंक

(राष्ट्रीय चेतना पर संक्षिप्त में लिखने पर 1 अंक एवं 5 बिन्दुओं पर विस्तार दिये जाने पर 5 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के सर्वप्रमुख नायकों में से एक माने जाते है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति घोषित किये गये। उन्होंने 21 अक्टूबर 1943 ईस्वीं को सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार का गठन किया।

सुभाषचन्द्र बोस ने दिल्ली चलो का नारा भी लगाया। उनकी इस अस्थीय सरकार को जर्मनी और जापान ने समर्थन किया। सुभाषचन्द्र बोस का नारा था ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा''।

6 नवम्बर 1943 ईस्वी को जापानी सेना ने आजाद हिन्द फौज को अण्डमान और निकोबार द्वीप सौंप दिये। बर्मा भारत सीमा पार कर प्रथम बार 1944 में आजाद हिन्द फौज ने भारत की स्वतंत्र भूमि पर तिरंगा झण्डा फहराया।

6 जुलाई 1944 ई. को बोस ने आजाद हिन्द रेडियो प्रसारण किया। इसमें पहली बार गांधी जी के लिए राष्ट्रपिता शब्द का संबोधन किया। अंग्रेज सरकार ने आजाद हिन्द फौज के सैनिकों जिनमें प्रमुख थे– सहगल, ढ़िल्लन तथा शाहनवाज खां आदि पर मुकदमा चलाया। देश भर में उनकी रक्षा के लिए आवाज उठी। अतः ब्रिटिश सरकार को मजबूर होकर आजाद हिन्द फौज के सभी सैनिकों को मुक्त करना पड़ा।

मई 1945 में ब्रिटिश सेना द्वारा रंगून पर पुनः अधिकार करने के साथ ही आजाद हिन्द फौज के साथ जापानी सेना को आत्म सर्मपण करना पड़ा।

18 अगस्त 1945 ई. को ताइकू हवाई अड्डे पर हुई विमान दुर्घटना में सुभाषचन्द्र बोस का निधन हो गया।

(उपरोक्तानुसार वर्णन लिखे जाने पर 3+3=6 अंक प्राप्त होंगे)

– – – – –